50



बच्चों ने यह गीत तो अनेक बार सुना होगा। साजन सजनियों को कहते है। उनको साजन कहा जाता है जब शरीर में आते है। नही तो वो बाप है। तुम बच्चे हो। तुम सब भक्तियाँ ही भगवान को याद करती हो। ब्राईडस ब्राईड ग्रुम को याद करती है। सबका माशूक है ब्राईडग्रुम। वो बैठ बच्चों को समझाते है अब जागो। अब नया युग आता है। नया माना ही सतयुग। पुरानी दुनियाँ है कलियुग। अब बाप आये हुये है तुमको स्वर्गवासी बनाते है। कोई मनुष्य तो कह नहीं सके कि हम तुमको स्वर्गवासी बनाते है। सन्यासी तो स्वर्ग और नर्क को बिलकुल ही नही जानते है। जैसे और धर्म है वैसे ही सन्यासियों का भी एक और धर्म है। वो कोई आदी सनातन देवी देवता धर्म के नही है। आदी सनातन देवी देवता धर्म की भगवान ही आकर स्थापना करते है। जो नर्कवासी हुवे है फिर सतयुगी स्वर्गवासी बनते है। अभी तुम नर्कवासी नही हो। अभी तुम संगम पर हो। संगम होता है बीच का समय। संगम पर स्वर्गवासी बनने का तुम पुरुषार्थ करते हो। इसलिये ही संगम युग की महिमा है। कुम्भ का मेला भी यही है सबलिये इसको ही पुरुषोत्तम युग कहा जाता है। तुम जानते हो हम सब एक बाप के बच्चे है। ब्रदरहुड कहते है ना। सभी आत्मायें आपस में भाई-2 है। कहते है हिन्दू चीनी भाई-2। अब धर्म के हिसाब से भाई-2 नही है। आत्मा के हिसाब से सब भाई-2 है। यह ज्ञान तुमको अभी मिला है। बाप समझाते है तुम मुझ बाप की सन्तान हो। अभी तुम सम्मुख सुनते हो। वो तो सिर्फ कहने मात्र कह देते है। सब आत्माओं का बाप एक है। मेल अथवा फीमेल सबमे आत्मा है। इस हिसाब से भाई-2 है। ।फिर भाई-बहन। फिर इसके बाद स्त्री पुरुष हो जाते है। तो बाप आकर बच्चों को समझाते है। गाया भी जाता है आत्मायें.... ऐसे नही कहा जाता कि नदियाँ और सागर अलग रहे बहुकाल.... बड़ी-2 नदियाँ तो सागर से मिली रहती है। यह भी बच्चे जानते है नदियाँ सागर के बच्चे है। सागर से पानी निकलता है बादलों द्वारा फिर बरसात पड़ती है। पहाड़ों पर। फिर नदियाँ बन जाती है। तो सभी हो जाते है सागर के बच्चे और बच्चियाँ। बहुतों को तो यह भी पता नही कि पानी कहाँ से निकलता है। यह भी सिखाया जाता है। यह अब बच्चे जानते है कि ज्ञान सागर एक ही बाप है। यह भी समझाया जाता है कि तुम सभी आत्मायें हो। बाप एक है। आत्मा भी निराकार है बाप भी निराकार है। फिर जब साकार में आते है तो पुनर्जन्म लेते है। बाप भी जब साकार में आवे तब आकर मिले। बाप का मिलना एक बारी ही होता है। इस समय आकर बाप सभी से मिलते है। यह भी जानते जावेंगे कि भगवान कौन है। गीता में तो कृष्ण का नाम डाल दिया है। परन्तु कृष्ण तो यहाँ आ नही सकते है। वो कैसे गाली खावे। यह तुम जानते हो कृष्ण की आत्मा इस समय है। पहले-2 तुमको ज्ञान मिलता है आत्मा का। तुम आत्मा हो। तुम अपने को शरीर समझ कर इतना समय चले हो। अब बाप आकर देही-अभिमानी बनाते है। साधु सन्त आदि कब तुम को देही-अभिमानी नही बनाते है। वो तो और ही उल्टा बता देते है। तो यह बाप ही आकर समझाते है कि तुम बच्चे हो। तुमको बेहद के बाप से वर्सा मिलता है। तुम्हारी बुद्धि में है कि हम परमधाम के रहने वाले है। हम फिर यहाँ पार्ट बजाने आये है। अभी यह नाटक पूरा होता है। यह ड्रामा कोई ने बनाया नही है। तुमसे कोई पूछते है यह ड्रामा कब से शुरू हुआ? बोलो यह तो अनादी ड्रामा है इनका आदि अन्त नही होता है। पुराना सो नया नाया सो पुराना बनता है। यह पाठ तो बच्चों को पक्का है। तुम जानते हो यह नई दुनिया कब बनती है पुरानी कब होती है। यह भी कोई-2 की बुद्धि में ही पूरी रीति है। बुद्धि में तो रहना ही चाहिये ना। तुम जानते हो कि अभी नाटक पूरा होता है। फिर रिपीट होगा जो कि शुरू में पार्ट बजाया था। वो ही फिर से रिपीट होगा। बोलो हमारा 84 जन्मों का पार्ट पूरा हुआ अब बाबा हमको ले जाने के लिये आया हुआ है। बाप गाईड भी तो है ना। तुम सब पण्डे हो। पण्डे लोग यात्राओं पर ले जाते है। वो है जिस्मानी पण्डे तुम हो रूहानी। इस लिये तुम्हारा नाम पाण्डव

पाण्डव सेना गाया हुआ है। तुम सेना भी हो। पण्डे भी हो। रूहानी यात्रा पर ले जाते हो। तुम्हारी यह पाण्डव गवर्मेन्ट है परन्तु गुप्त। पाण्डव गवर्मेन्ट कौरव और यादव गवर्मेन्ट क्या करते थे। यह इस समय की बात है जब कि महाभारत की लड़ाई का समय भी सिर पर है। अनेकों धर्म होते दुनियां भी तमोप्रधान है। कलयुगी धर्मों का झाड़ सारा पुराना हो गया है। तुम जानते हो इस झाड़ का पहला-2 फाउंडेशन है आदी सनातन देवी देवता धर्म का। पहले-2 सतयुग में थोड़े होंगे। फिर वृद्धि को पाते है। पहले है सतोप्रधान अभी है तमोप्रधान। यह किसीको भी पता नही है। दुनिया में भी नम्बरवार है। स्टूडेन्ट में कोई अच्छे समझदार होते है। अच्छी धारणा करते है। और करने का शौक होता है। कोई तो अच्छी रीती धारणा करते है कोई मिडियम कोई थर्ड क्लास कोई फेल। प्रदर्शनी में तो रिफाइन रीती समझाने वाले चाहिये। पहले-2 तो कोई को भी यही बताना है कि दो बाप है। एक है बेहद का पारलौकिक बाप दूसरा है हद का लौकिक बाप। भारत को बेहद का वर्सा मिला है। भारत स्वर्ग था। आज से 5000 वर्ष पहले। अब इनके रचयिता को तो हेवनली गाड फादर कहा जाता है। भारत स्वर्ग था जो ही फिर नर्क बना है। इसको आसुरी राज्य रावण राज्य कहा जाता है। भक्ति भी पहले-2 अव्यभिचारी होती है। एक शिव बाबा को ही याद करते है। अब फिर बाबा कहते है कि एक ही से सुनो। यह है अव्यभिचारी ज्ञान। और कोई से जो सुनेंगे वो सब झूठ। ईविल ही बताते है। बाप अभी तुमको सच्चा सुना कर पुरुषोत्तम बनाते है। ईविल बातें सुनते-2 तुम कनिष्ट बन गये हो। कितने ढेर के ढेर मनुष्य है। झूठ ही झूठ सुनते रहते है। ईश्वर सर्वव्यापी है। गीता का भगवान कृष्ण है कितना फर्क हो जाता है। कहाँ तो पुनर्जन्म रहित भगवान। कहाँ फिर 84 जन्म लेने वाला कृष्ण। गीता कितनी खण्डन हो गई है। गीता झूठी भागवत झूठी हो गई है। फिर उनमें झूठ लिख दी है। सच्ची सुनाई बाप ने। और नाम रख दिया है इनके का। अभी कहा है जाता है पतित दुनियां। सम्पूर्ण पतित है। सतयुग में होते है सम्पूर्ण पावन तन-मन। इन बातों को जानते नही है। कितने कहते कि कृष्ण पुनर्जन्म लेते है तो एकदम बिगड़ पड़ेंगे। वो तो समझते है कि कृष्ण भगवान है। यथा राजा रानी तथा प्रजा सब भगवान भगवती है। वो फिर उठा लेते है। यह सब उठाया है शास्त्रों से। शास्त्र है ही कर्म काण्ड के लिये। वो है भक्ति मार्ग का ज्ञान। अज्ञान का अन्धेरा ज्ञान को सोझरा कहा जाता है। सोझरा माना ब्रह्मा का दिन। अन्धेरा माना ब्रह्मा की रात। यह सब प्वाइन्टस धारणा करने की है। नम्बरवार तो हर बात में होते है। जैसे डाक्टर कोई तो 10, 20 हजार भी एक केस का लेते है। कोई तो देखो तो खाने लिये भी नही होता है। वकीलों में भी ऐसे होते है। तुम भी जानते हो जितना पढ़ेंगे और पढ़ायेंगे उतना ऊँच पद पावेंगे। ठीक तो है ना। दास-दासियों में भी नम्बरवार होते है। सारा मदार ही पढ़ाई पर है। अपने से पूछना चाहिये हम कितना पढ़ते है। भविष्य जन्म जन्मान्तर क्या बनेंगे। जन्म जन्मान्तर जो बनेंगे सो ही कल्प कल्पान्तर बनेंगे। इसलिये ही पढ़ाई पर तो पूरा अटेन्शन देना चाहिये। मूत पीना तो एकदम ही छोड़ देना चाहिये। मूत पीने वाले मूत पीने बिगर रह ना सकें। समझते है कि यह तो चला ही आता है। बच्चे मूत से ही पैदा होते है। इसलिये ही उनको मूत पलीती कहा जाता है। सतयुग में तो ऐसे नही कहा जावेगा। मूत पलीती कपड़ धोये यहां होता है। इस समय सबका चोला सड़ा हुआ है। तमोप्रधान है ना। यह भी समझने की बात है ना। सबसे पुराना चोला किसका है? हमारा। हम इस शरीर को बदलते रहते है। आत्मा पुरानी पतित बनती जाती है तो शरीर भी पुराना पतित होता जाता है। शरीर बदलना होता है। आत्मा तो नही बदलेगी। शरीर बूढ़ा हो जाता है तो फिर मृत्यु आ जाती है। यह भी ड्रामा बना हुआ है। सबका पार्ट है। आत्मा को कहा जाता है अविनाशी। आत्मा खुद कहती है मैं शरीर छोड़ती हूँ। देही-अभिमानी बनना पड़े। मनुष्य सब देह-अभिमानी है। आत्म स्वरूप है देहीअभिमानी

बच्चे भी समझते है कि हम आत्मा है हमको यह पुराना शरीर छोड़ कर दूसरा लेना है। इसलिये मोहजीत राजा कहा जाता है। मोह जीत राजा की भी कथा है नां। वो भी बनाई हुई है। बाप समझाते है दैवी दैवताये मोह जीत होती है। खुशी से एक शरीर छोड़ कर दूसरा ले लेते है। बच्चों को यह सारी नालेज व काम बदला मिल रही है। तुम ही चक्र खाये अब फिर आकर मिले हो। जो और-2 धर्मों में कनवर्ट हो गये है वो भी आकर मिलेंगे। अपना थोड़ा बहुत वर्सा ले लेंगे। धर्म ही बदल गया है नां। पता नही कितना समय उस दूसरे धर्म में रहे है। दो तीन जन्म ले सकते है। मुसलमानों को 500 600 वर्ष हुआ होगा। कोई को हिन्दु से मुसलमान बना देते है उस धर्म में आता रहेगा। फिर यहां आते है। इतना समय तो भक्ति नही की होगी। यह है डीटेल की बातें। बाप कहते है इतनी बातें याद नां कर सके, अच्छा अपने को बाप का बच्चा तो समझो। अच्छे-2 बच्चे भी भूल जाते है। बाप को याद नही करते है। माया इसमें ही भुलाती है। तुम भी तो पहले माया के ही मुरीद थे नां। अब ईश्वर के बच्चे हो। यह ड्रामा में पार्ट है। अपने को आत्मा समझ बाप को याद करना है। तुम आत्मा जैसी आती है तो तुम पवित्र हो। फिर पुनर्जन्म लेते-2 तुम पतित बने हो। अब फिर बाप कहते है नष्टोमोहा बनो। इस शरीर में भी मोह नही रहे। आत्मा समझती है कि इस पुरानी दुनियां में तो है ही दु:ख देने वाले है। इस लिये ही वैकुण्ठ का कैरांग आता है। पुरानी दुनियां को ही भूल जाओ। हम नंगे आये थे अब फिर नंगे ही वापस जाता हूं। बुद्धी से सब भूल जाना है। अब यह दुनियां ही खत्म होनी है। अब हम तमोप्रधान से सतोप्रधान कैसे बने। इसके लिये भी बाप कहते है कि मामेकम् याद करो तो पावन बन जायेंगे। यह युक्ति कल्प-2 तुमको बताता हूं। बाप ही कहते है मामेकम् याद करो। कृष्ण तो कह नही सकते कि मामेकम् याद करो। कृष्ण तो सतयुग में होता है। बाप ही कहते है मुझे तुम पतित पावन भी कहते हो तो अब मुझे याद करो। मै यह युक्ति बताता हु पावन बनने की। कल्प-2 यह युक्ति बताता हूं। जब पुरानी दुनियां होती है तो भगवान को आना होता है। मनुष्यों ने ड्रामा की आयु बहुत लम्बी चौड़ी कर दी है तो मनुष्य ही भूल गये है। अब तुम जानते हो कि यह संगम युग है। यह है पुरुषोत्तम कल्याणकारी युग। मनुष्य तो बिल्कुल ही घोर अन्धेरे में पड़े है। कहते है अज्ञान अंधेरा। ज्ञान है सोझरा। सतयुग त्रेता में भक्ति होती नही। सीढ़ी उतरते है तो भक्ति शुरु होती है। पहले अव्यभिचारी भक्ति फिर व्यभिचारी होती है। भक्ति भी सतो प्रधान सतो रजो तमो होती है। इस समय है तमोप्रधान। अभी तुम तमोप्रधान से सतोप्रधान बनते हो। तुमने ही सबसे जास्ती भक्ति की है। अब बच्चे जानते है कि भक्ति मार्ग खत्म होता है। भक्ति मार्ग है ही मृत्यु लोक में। मृत्यु लोक के बाद फिर आवेगा अमर लोक। तुम इस समय ज्ञान लेते हो। फिर भक्ति का नाम निशान नही रहेगा। हे भगवान हे राम यह सब भक्ति मार्ग के अक्षर है। इसमें कोई आवाज नही करना है। बाप ज्ञान का सागर है तो आवाज थोड़ेई करते है। उनको कहा जाता है पतित पावन सुख का सागर शान्ति का सागर। तुमको सुनाने के लिये भी तो उनको शरीर चाहिये नां। भगवान की भाषा क्या है यह भी कोई जानते थोड़ेई है। जिसकी जो भाषा वो ही सीखनी पड़े। ऐसे तो नही कि बाबा ही सब भाषाओं में बोलेंगे। नही उनकी भाषा ही है हिन्दी। बाबा को यह भाषायें आदि थोड़ेई थोड़ेई सीखनी है। सीखने में ही बड़ी लग जावे। बाप तो एक ही भाषा में समझाते है। फिर ट्रान्सलेट कर तुम समझाते हो। फौरेनर्स आदि जो भी मिले उनको बाप का परिचय देना है। बाप आदी सनातन देवी देवता धर्म की स्थापना कर रहे है। त्रिमूर्ती पर समझाना चाहिये। प्रजापिता ब्रह्मा के कितने ब्र, कु, कु है। कोई भी आवे तो पहले तो उनसे पूछो कि किसके पास आये हो? बोर्ड तो लगा हुआ है। प्रजापिता। वो तो रचने वाला हो गया नां। परन्तु उनको भगवान नही कह सकते है। भगवान निराकार को ही कहा जाता है। (फिर भी) ओम